गुरु नानक – सबद ६४

वणजु करहु वणजारिहो वखरु लेहु समालि ॥

रागु सिरिरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, २२

वणजु करहु वणजारिहो वखरु लेहु समालि ॥
तैसी वसतु विसाहीऐ जैसी निबहै नालि ॥
अगै साहु सुजाणु है लैसी वसतु समालि ॥१॥
भाई रे रामु कहहु चितु लाइ ॥
हरि जसु वखरु लै चलहु सहु देखै पतीआइ ॥१॥ रहाउ ॥
जिना रासि न सचु है किउ तिना सुखु होइ ॥
खोटै वणजि वणंजिऐ मनु तनु खोटा होइ ॥
फाही फाथे मिरग जिउ दूखु घणो नित रोइ ॥२॥
खोटे पोतै ना पवहि तिन हरि गुर दरसु न होइ ॥
खोटे जाति न पति है खोटि न सीझसि कोइ ॥
खोटे खोटु कमावणा आइ गइआ पति खोइ ॥३॥
नानक मनु समझाईऐ गुर कै सबदि सालाह ॥
राम नाम रंगि रतिआ भारु न भरमु तिनाह ॥
हरि जपि लाहा अगला निरभउ हरि मन माह ॥४॥२३॥

सार: अच्छे व्यापारी का रूपक अध्यात्मक दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है। सफल व्यापारी नैतिक लेन-देन में संलग्न, धार्मिकता का प्रतीक होते हैं । वह ईमानदारी से व्यापारिक लेन-देन व माल की सावधानीपूर्वक सुरक्षा करते हैं। इसी तरह, हमें अपने द्वारा ग्रहण किए जाने वाले ज्ञान के प्रति सचेत रहना चाहिऐ। यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह भ्रम के बजाय सत्य के साथ संरेखित हों। इसी तरह प्राप्त की गई मूल्यवान अंतर्दृष्टि की रक्षा करें क्योंकि व्यावहारिक तौर पर लागू किये बिना यह असुरक्षित धन की तरह हैं जो आसानी से खो सकते हैं या इसका दुरुपयोग भी हो सकता है।

वणजु करहु वणजारिहो वखरु लेहु समालि ॥
व्यापारी सावधानीपूर्वक माल की सुरक्षा करते हुए व्यापार करते हैं। यह रूपक मूलतः मूल्यों की रक्षा करते हुए ज्ञान प्राप्त करने के महत्व को दर्शाता है।

तैसी वसतु विसाहीऐ जैसी निबहै नालि ॥
सदा लाभकारी वस्तुओं के व्यापार में कार्यरत रहें । यह रूपक उन गुणों को अपनाने की सलाह देता है जो जीवन को निरंतर समृद्ध करते हैं।

अगै साहु सुजाणु है लैसी वसतु समालि ॥१॥
इसके बाद, बुद्धिमान व्यापारी वस्तुओं की देखभाल करेगा। यह रूपक इस बात पर प्रकाश डालता है कि हमारा सचेत चिंतन हमारे कार्यों की रक्षा करता है। (१)

भाई रे रामु कहहु चितु लाइ ॥
साथियों, आइए हम सर्वव्यापी एकता की खोज करें और अपनी साझा जागरूकता के माध्यम से इससे जुड़ें।

हरि जसु वखरु लै चलहु सहु देखै पतीआइ ॥१॥ रहाउ ॥
एकता के सम्मानरूपी पुण्य वस्तु को चेतना के समक्ष पेश करें, एक व्यापारी की तरह चेतना इसे परखेगी, उसके सार को समझेगी और इसे मंज़ूरी देगी। (१)(विराम)

जिना रासि न सचु है किउ तिना सुखु होइ ॥
जिन्होंने ईमानदारी को अपनी मूल्यवान संपत्ति के रूप में नहीं अपनाया है, वह शांति कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

खोटै वणजि वणंजिऐ मनु तनु खोटा होइ ॥
जब कोई बेईमानी करता है तो मन और शरीर दोनों भ्रष्ट हो जाते हैं।

फाही फाथे मिरग जिउ दूखु घणो नित रोइ ॥२॥

फंदे में फंसा हुआ हिरण बहुत पीड़ित होता है, सदा दर्द से चिल्लाता रहता है। प्रतीकात्मक रूप से यह दर्शाता है कि कैसे झूठ में फंसा हुआ मन लगातार नकारात्मक विचारों की पीड़ा महसूस करता है। (२)

खोटे पोतै ना पवहि तिन हरि गुर दरसु न होइ ॥

खोटा सिक्का ख़ज़ाने में नहीं जोड़ा जा सकता। इसी तरह बेईमान व्यक्ति ईश्वरीय उपस्थिति के आध्यात्मिक ज्ञान का अनुभव नहीं कर सकता है ।

खोटे जाति न पति है खोटि न सीझसि कोइ ॥

बेईमान व्यक्ति सामाजिक प्रतिष्ठा या सम्मान के लायक नहीं होता और कोई भी व्यक्ति छल-कपट के माध्यम से सफलता प्राप्त नहीं कर सकता।

खोटे खोटु कमावणा आइ गइआ पति खोइ ॥३॥

मिथ्याचार का अभ्यास करने से व्यक्ति आध्यात्मिक उन्नति और पतन के चक्र में फंस जाता है तथा सम्मान की पात्रता खो देता है। (३)

नानक मनु समझाईऐ गुर कै सबदि सालाह ॥

नानक मन को आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि में ज्ञान के महत्व पर चिंतन करने की सलाह देते हैं।

राम नाम रंगि रतिआ भारु न भरमु तिनाह ॥

जो सर्वव्यापी ऊर्जा की एकता के चिंतन में डूबे रहते हैं वह संदेह के बोझ से मुक्त हो जाते हैं।

हरि जपि लाहा अगला निरभउ हरि मन माह ॥४॥२३॥

सृष्टि की एकता पर चिंतन के माध्यम से व्यक्ति अपने हृदय में निवास करने वाली निर्भय, सर्वव्यापी जागरूकता के बारे में गहन अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकता है। (४)(२३)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि जिस तरह एक नकली सिक्का ख़ज़ाने में कोई मूल्य नहीं रखता, उसी तरह एक बेईमान दिल दिव्य ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। असत्य सच्ची आध्यात्मिक पूर्णता को बाधित करता है जिससे व्यक्ति आध्यात्मिक उत्थान और पतन के चक्र में फंस कर अपनी आत्मिक गरिमा को खो देता है। केवल सत्य, विनम्रता और गहन आत्मचिंतन के माध्यम से ही हम भ्रम और संदेह से मुक्त हो सकते हैं और सर्वव्यापक एकता के प्रकाशमय अनुभव को प्राप्त कर सकते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com